भगवान् धन्वन्तरि एवं दिवोदास धन्वन्तरि

पंडित अनन्त शर्मा
पूर्व दर्शन विभागाध्यक्ष
ज.रा.स.वि.वि., जयपुर

प्राचीन काल से आयुर्वेद मनीषी प्रायः सम्पूर्ण भारत में धन्वन्तरि जयन्ती कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को जो धन्वन्तरि त्रयोदशी के नाम से प्रसिद्ध है अमृत प्राप्ति के लिए किये गये समुद्र मन्थन में अमृत कलश लिए प्रकट हुये भगवान् धन्वन्तरि का पूजन करते है।

भगवान् विष्णु का यह बारहवाँ अवतार था। ये ऐसे अवतार अंशावतार होते हैं जो अपना संक्षिप्त या तात्कालिक कार्य पूरा करके तिरोहित हो जाते हैं। सुश्रुत संहिता निदान स्थान अध्याय एक में **'धन्वन्तरि धर्मभृतां वरिष्टममृतोद्भवम्'** के अनुसार इन धन्वन्तरि को अमृत उद्भव (जनक) कहा गया है।

धन्वन्तरि अवतार के बाद काशी के एक राजा हुये वे भी धन्वन्तरि नाम से विख्यात हुये। काश का स्थापित राज्य काशी था और उनकी राजधानी भी काशी नगरी थी। काश के पौत्र धन्व ने विष्णु के अवतार भगवान् धन्वन्तरि से पुत्र प्राप्ति हो जाने पर अपने इस पुत्र का नाम भी धन्वन्तरि ही रखा। ये धन्वन्तरि द्वितीय के नाम से जाने गये। ये काशी के राजा बने। यह काशी ही उस युग में आर्यावर्त की राजधानी थी। काशी जैसे समृद्ध साम्राज्य की नींव डालकर महाराज काश ने जो विशाल राष्ट्र निर्माण किया, उनके पौत्र धन्वन्तरि ने इस काशी को ज्ञान-विज्ञान के वैभव से सुसज्जित किया इसे वसुधा का स्वर्ग बना दिया। इन्होंने काशी को तीर्थ बना दिया। यह काशी विद्यापीठ रहने के साथ ही पराक्रम पीठ भी रही है। इन धन्वन्तरि के बाद उनके पुत्र केतुमान और पौत्र भीमरथ ने कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किये। गृह कलह की ज्वाला सुलगने लगी और इस ज्वाला से निकलने वाले धूम ने काशी का प्रकाश धूमिल कर दिया। इसके बाद भीमरथ के पुत्र दिवोदास ने इस काशी को पुनः आलोकित किया। दिवोदास से पहले काशी पर कुछ आक्रान्ताओं का अधिकार हो गया था अतः दिवोदास को काशी के समीप ही वाराणसी नाम की एक अन्य नगरी बसानी पड़ी थी। वरुणा और असी नदियों के बीच में आबाद यह नगरी एक भव्य स्थान बन गया। हरिवंश पुराण के अनुसार वाराणसी पहले से ही बसी हुई थी, दिवोदास ने उसे भव्य रूप देकर राजधानी बना दिया। किन्तु महाभारत के अनुसार दिवोदास ने ही वाराणसी को आबाद किया था। पाणिनि ने काशी को जनपद (जिला) और वाराणसी को नगर लिखा है।

दिवोदास धन्वन्दरि के शिष्य सुश्रुत ने जो सुश्रुत संहिता लिखी, उसमें जहाँ **' यथोवाच भगवान् धन्वन्तरिः'** और 'इति धन्वन्तरिर्मतम्' वाक्य आये हैं ये सब भूतकालीन धन्वन्तरि (दिवोदास के पितामह) के लिए कहा गया और जहाँ वर्तमानकालीन क्रिया के साथ धन्वन्तरि शब्द आया है वह दिवोदास को बोधित करता है। **"धन्वन्तरिः काशीपति स्तपोधर्मभृतां वरः"** यहाँ पर आया हुआ धन्वन्तरि विशेषण है जो दिवोदास का बोधक है। ये दिवोदास धन्वन्तरि एक सम्राट एक कर्मवीर होने के साथ ही आयुर्वेद के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आर्यावर्त में आयुर्वेद की प्रतिष्ठा और उसके प्रचार-प्रसार में इनकी प्रमुख भूमिका रही। सुश्रुत संहिता जो एक शल्यतंत्र प्रधान आयुर्वेद का ग्रन्थ है पढ़ने से ऐसा लगता है-दिवोदास के भीतर से उनके प्रपितामह धन्वन्तरि ही बोल रहे हैं। वे कहते हैं- हे सुश्रुत ! तुम्हें एवं अन्य शिष्यों को ज्ञान देने के लिए मैं वह धन्वन्तरि ही फिर से लौट आया हूँ-

अहं हि धन्वन्तरिरादिदेवो जरारुजामृत्युहरो नराणाम्।
शल्याङ्गमङ्गैरपरैरुपेतं प्राप्तोऽस्मिं गां भूय इहोपदेष्टुम् ।। सुश्रुत सू. 1-21

दिवोदास ने अपने ज्ञान को दूर-दूर तक प्रतिष्ठापित किया जिससे प्रभावित होकर उनसे कई शिष्यों ने ज्ञान प्राप्त किया। सुश्रुत, औषधेनव, वैतरण, औरभ्र, पौष्कलावत, करवीर्य, गोपुर और रक्षित ये आठ शिष्य तो इनके मुख्य थे ही। इनका वर्णन सुश्रुत संहिता में मिलता है। इनके अतिरिक्त व्याख्याकारों के मत से इनके निमि कांकायन, भोज, गार्ग्य, गालव आदि भी शिष्य थे। इन शिष्यों के अतिरिक्त शौनक, कृतवीर्य, पाराशर्य, मार्कण्डेय, सुभूति, गौतम आदि भी ऐसे विद्वान् थे जो दिवोदास धन्वन्तरि के सैद्धान्तिक विवेचनों में भागीदार थे।

दिवोदास के पुत्र का नाम प्रतर्दन था। ये भी एक वीर योद्धा थे। दिवोदास महाराज दशरथ के सखा थे तो प्रतर्दन भगवान् राम के घनिष्ठ मित्र थे। महाराज दशरथ ने जब अश्वमेघ यज्ञ किया था तो काशीपति इन दिवोदास को भी बुलाया था।

इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान् राम का जन्म त्रेतायुग में ना होकर द्वापरयुग में हुआ था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम का समय द्वापरययुग ही है। महाकविभास का लिखा हुआ रामायण पर एक नाटक है।

वे बालचरित्र नामक नाटक के मंगलपद्य में स्पष्ट रूप से राम को द्वापर में बताते हैं-

शंखक्षीवपुः पुरा कृतयुगे नाम्नातु नारायणः त्रेतायां त्रिपदार्पित त्रिभुवनो विष्णुः सुवर्णप्रभः ।
दूर्वा श्यामनिभः सरावणवधे रामो युगे द्वापरे नित्यं योऽञ्जनसन्निभः कलियुगे वः पातु दामोदरः ।।

महाभारत के शान्तिपर्व में भावी अवतारों की गणना में कहा गया है-

त्रेतायुगे भविष्यमि रामो भृगुकुलोद्वहः। क्षत्र चोत्सादयिष्यमि समृद्धबल वाहनः ।।

सन्ध्यांशे समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च। अहं दाशरथी रामो भविष्यामि जगत्पतिः ।।

त्रेतायुग में मैं भृगुकुल वंशज परशुराम के रूप में जन्म लूंगा तथा समृद्ध सेना और वाहनों से भरे पूरे क्षत्रियों का वध करूंगा। त्रेता द्वापर के सन्ध्यांश के परिपूर्ण हो लेने पर जगत्पालक मैं दशरथ नन्दन राम के रूप में आऊंगा।

अतः हम यह कह सकते है कि राम को त्रेतायुग में बताना ठीक नहीं है। रामायण और महाभारत के अनुसार भी राम द्वापरयुग में ही अवतीर्ण हुये थे। दिवोदास धन्वन्तरि के गुरु भी इन्द्र ही है। इन्द्र से ही आपने आयुर्वेद का पूरा ज्ञान प्राप्त किया था और फिर इसका भूतल पर प्रचार प्रसार किया था।.

विक्रम संवत् 2000 वर्ष पूरे होने पर एक "विक्रमस्मृति" नामक ग्रन्थ उज्जैन से प्रकाशित किया गया था। इसमें श्री बृजकिशोर चतुर्वेदी का एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसका यह भाग द्रष्टव्य है- काशी के राजा धन्वन्तरि बताये जाते है। सम्भव है महाराजों पर विजय पाकर विक्रमादित्य सम्राट् हुये हो तब काशीराज उनकी राजधानी उज्जैन में बुलाये जाकर सम्राट् की अन्तरंग सभा के सदस्य हुये हों। यह भी सम्भव है कि आयुर्वेद के प्रचार करने हेतु राजपाट अपने पुत्र को देकर काशीराज दिवोदास धन्वन्तरि वृद्धावस्था में केवल आयुर्वेद शिक्षा प्रसार हेतु उज्जयिनी में बस गये हों (पृ. 262)। संस्कृत जगत् में यह पद्य प्रसिद्ध है-

धन्वन्तरिक्षपणकारसिंहशङ्कु वेतालभट्टघटखर्परकालिदासः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतिसभायां रत्नानि वै वररुचि नव विक्रमस्य ।।

1. धन्वन्तरि 2. क्षपण 3. अमरसिंह 4. शङ्क 5. वेताल

6. घटखर्पर 7. कालिदास 8. वराहमिहिर 9. वररुचि

यह पद्य कालिदासकृत ज्योतिर्विदाभरण का है। यहाँ यह उल्लेख कर देना उपयुक्त होगा कि इस पद्य में वर्णित धन्वन्तरि कोई अन्य धन्वन्तरि है। अनेक व्यक्तियों के धन्वन्तरि नाम मिलते है। क्या यह कोई अन्य धन्वन्तरि नहीं हो सकता है जो विक्रमादित्य के न्यूनातिन्यून 5000 वर्ष पूर्व होने वाले दिवोदास धन्वन्तरि को इस रूप में यहाँ बताया गया। रामायण महाभारत एवं अन्य पुराणों में दिवोदास और इनके पुत्र प्रतर्दन को शतशः बार याद किया गया है- इसे अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।